वर्ष 48 । अंक 11 । नवम्बर 2021

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 48 ● अंक 11 ● नवम्बर 2021 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एम. पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II,
नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध-सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
48. आपके पत्र मिले
50. रंग भरो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कविताएं

7. ज्योति-पर्व
: राजेन्द्र निशेश

11. आगे बढ़ते जाना
: राजकुमार जैन 'राजन'

11. तितली
: घमण्डीलाल अग्रवाल

21. जल प्रदूषण
: डॉ. अलका अग्रवाल

29. कभी नहीं स्वीकार
: श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

33. मीठी बोली
: कमलसिंह चौहान

33. फूलों-सा मुस्काओ
: डॉ. रामनिवास 'मानव'

47. बाल दिवस का न्यारा दिन
: सुमेश निषाद

47. जगमग जगमग दीप जले
: शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

कहानियां

8. अंधकार के बदले रोशनी
: अंजू जैन

18. दृढ़ निश्चय का फल
: डॉ. सत्यप्रकाश वर्मा

19. क्या चोर को भूख...
: कमल सोगानी

22. सदुपयोग की सीख
: राधेलाल 'नवचक्र'

27. राजू की दीवाली
: साबिर हुसैन

31. नीलम परी और मोनू
: गोविन्द भारद्वाज

42. संदेश
: दर्शन सिंह 'आशट'

विशेष/लेख

16. हाथी बुद्धिमान और ...
: दीपांशु जैन

25. हम मधुमक्खियां
: नीलम ज्योति

30. पहेलियां
: राधा नाचीज

39. झींगा मछली
: डॉ. परशुराम शुक्ल

46. नन्हीं चिड़िया जेब्रा फिंच
: विद्या प्रकाश

नया दृष्टिकोण

संसार के हर मानव के पास सोचने-समझने की शक्ति है परन्तु हर व्यक्ति के विचार एक-दूसरे से कभी तालमेल रखते हैं और कभी नहीं भी रखते। विचारधारा एक होने पर भी विचारों का सुन्दर समन्वय कई बार सम्भव नहीं हो पाता। अधिकतर यह व्यक्ति के सामाजिक परिवेश, परिस्थिति, वातावरण, ज्ञान और शिक्षा पर निर्भर करता है। इस प्रकार हमारा सोचना-विचारना एक क्रिया मात्र बन जाती है और वह भी उस तरह की क्रिया जैसा उसने अपने सोचने के ढंग द्वारा बना लिया है। धीरे-धीरे यही चिन्तन-मनन हमारी दृष्टि का अभिन्न अंग बन जाता है।

दृष्टि केवल देखने मात्र का नाम नहीं है। हम अपनी आँखों से कुछ दूरी तक ही देख सकते हैं। यह हमारी आँखों का कार्य है परन्तु हम क्या देखते हैं यह हमारे दृष्टिकोण पर आधारित होता है। दृष्टिकोण हमारी विचारधारा के अधीन हो जाता है। अगर हमारे विचार किसी अन्य की विचारधारा से भिन्न होते हैं तो हम उसे अपने व्यक्तिगत मापदंड से आंकते हैं। इसी प्रकार दूसरा भी हमें अपने तय मापदंडों से ही आंकता है। इस प्रकार अपनी दृष्टि से दोनों व्यक्ति, जाति, समाज या देश एक दूरी या सीमा बना लेते हैं। यही दृष्टि भेद है।

जितने भी व्यक्ति या प्राणी हैं सबकी दृष्टि किसी न किसी स्तर पर अलग होती है और वह अपनी स्थिति, बुद्धि, संस्कारों से एक नया संसार अपने मन में ही निर्मित कर लेते हैं। एक बच्चे का संसार केवल कुछ खिलौनों तक भले ही सीमित हो सकता है परन्तु जिनका वह बच्चा है उनका संसार सर्वथा भिन्न हो सकता है। वे बच्चों से यह आशा लेकर चलते हैं कि उनको कैसे खिलाना है, कैसे पढ़ाना है और कैसे आगे बढ़ाना है। वे यह भी चाहते हैं कि जब बच्चे बड़े होंगे तो हमारा कहना मानेंगे, जो हम कहेंगे वही करेंगे इत्यादि-इत्यादि। माता-पिता इन्हीं बातों को अपना संसार मान बैठते हैं परन्तु समय, आयु, तकनीक, वातावरण और बदलती सामाजिक, व्यवहारिक परिस्थितियां विचारधारा को भी बदल देती हैं। फिर एक नया संसार एवं दृष्टिकोण निर्मित हो जाता है। इस प्रकार दृष्टिकोण तो हर समय बदलते रहेंगे परन्तु हमारी दृष्टि, नजरिया, दूर-दृष्टि, ज्ञान, निगाह और विचार एक जैसे रह सकते हैं। हमें किसी से कोई भी अपेक्षा नहीं करनी होगी। किसी की विचारधारा को गलत कहने का मोह भी त्यागना होगा।

बदलते युग में हमें भी समयानुसार बदलना होगा। अपने तौर-तरीकों और मापदंड से ही किसी को आंकना हमारे लिए ठीक नहीं होगा।

हमें तो केवल समदृष्टि से मानव को जानना होगा। जैसा व्यवहार हम अपने प्रति चाहते हैं कि दूसरे हम से अच्छा, सौम्य और मृदु व्यवहार करें, पहले हमें अपने कर्म और आचरण से वैसा ही व्यवहार दूसरों के प्रति करना होगा। इसी से हम दूसरे व्यक्ति का नज़रिया या दृष्टिकोण बदल सकेंगे। इसी तरह हमारे दृष्टिकोण को सही मार्गदर्शन देने के निरंकारी संत समागम इस बार भी नवम्बर 2021 में हो रहा है। हम सभी इससे लाभान्वित हो सकते हैं।

- विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 243

इस जग दा सामान है झूठा अंत नाल नहीं जाणा ए।
साध संग मिल नाम नूं जाणो जिस ने पार लंघाणा ए।
बिना नाम दे जनम मरण तों किसे नहीं बचाणा ए।
गेड़ चौरासी लख जूनां दा रब दे ज्ञान मुकाणा ए।
ज्ञान गुरु दे बाझों बन्दे अज तक किसे ने पाया नहीं।
कहे अवतार ज्ञान नहीं मिल्या जद तक गुरु रिझाया नहीं।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह संसार मिथ्या है। यहाँ की वस्तुएं भी नाशवान और झूठी हैं। अंत समय में ये साथ जाने वाली नहीं हैं। सत्य प्रभु-परमात्मा ही सदैव रहता है। झूठ हमेशा साथ नहीं देता। सत्य और झूठ की जानकारी सद्गुरु से होती है। सत्य वह है जो शाश्वत् है, अविनाशी है और झूठ वह है जो आज है पर कल नहीं है। सत्य का पहचान के लिए मानव तू सद्गुरु से मिलकर इस नाम धन की प्राप्ति कर ले। इस नाम धन ने ही तुझे भव सागर से पार लगाना है। मिथ्या का संग तो डुबोने वाला है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि अंग-संग रहने वाले इस रमे राम की पहचान सद्गुरु की शरण में आकर ही होती है। इसमें अन्य कोई उपाय काम नहीं आता। नामी और नाम का रहस्य गुरु से मिलकर जाना जा सकता है। संसार में जीव जन्म लेता है और एक न एक दिन उसकी मृत्यु हो जाती है। जन्म-मरण का यह चक्र बहुत लम्बा और कष्टदायक है। चौरासी लाख योनियों में जन्म-मरण का सिलसिला बिना रुके तब तक चलता रहता है जब तक कि सद्गुरु की कृपा से इस नामी को, इस प्रभु को जान न लिया जाए। जन्म-मरण के भयानक चक्र से परमात्मा का ज्ञान ही बचा सकता है और यह ज्ञान सद्गुरु की कृपा से मानव योनि में ही प्राप्त होता है। संसार में किसी का बहुत बड़ा परिवार है, बहुत प्रतिष्ठित लोग उसको जानते हैं। वह राजाधिराज भी हैं फिर भी ज्ञान के बिना उसकी मुक्ति संभव नहीं है।

मानव को परमात्मा ने विशेष समझ बख़्शी है जिसको प्रयोग करके यह अपने आवागमन के चक्र को समाप्त कर सकता है। मानव का सबसे पहला और महत्वपूर्ण कार्य ही जन्म-मरण के चक्र से छूट जाना है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि परमात्मा का ज्ञान आज तक सद्गुरु की कृपा के बिना किसी ने प्राप्त नहीं किया। सद्गुरु की कृपा के बिना आज तक किसी ने इस प्रभु का अंग-संग एहसास नहीं किया है। ज्ञान कृपा साध्य है। बिना सद्गुरु की कृपा और प्रसन्नता के यह दुर्लभ है। सद्गुरु को रिझाकर, प्रसन्न करके परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करना है और ज्ञान मार्ग पर चलकर अपना जीवन सुखमय बनाना है।

भावार्थ : हरजीत निषाद

– संकलन : श्रीराम प्रजापति

अनमोल वचन

❖ विनम्र रहकर भी स्वाभिमान को कायम रखा जा सकता है और वो जरूरी भी है। पर ध्यान रहे कि कहीं स्वाभिमान अहंकार का रूप न ले ले। भक्त विनम्र भाव में रहते हुए अपनी हर जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी इस निरंकार से जुड़े रहते हैं। निरंकार के एहसास में किया गया हर कर्म भक्ति बन जाता है।

❖ हमें अपने असली मूल, इस निरंकार से जुड़ के रहना चाहिए। हमारा जीवन बहते पानी की तरह सहज और विनम्र होना चाहिए।

❖ हमें एक-दूसरे का सहारा बनना है क्योंकि सभी तो परमात्मा के बंदे हैं। युगों-युगों से संतों ने जो शिक्षाएं दी हैं वो हर युग में सत्य और सार्थक होती हैं।

-सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

❖ परिश्रम वह चाबी है जो सोये भाग्य के फाटक खोल देती है।

❖ आलस्य ही जीवित व्यक्ति की मृत्यु है।

– चाणक्य

❖ अपनी विद्वता पर गर्व करना सबसे बड़ा अज्ञान है। **– महावीर**

❖ बुद्धिमानों की झिड़कियां सुनना भला है लेकिन मूर्खों से गीत सुनना अच्छा नहीं।

– इन्जील

❖ जीवन केवल समय काटने के लिए नहीं है, बड़ा बनने के लिए है। **– मार्शल**

❖ जहाँ अच्छी बात का आदर न हो, वहाँ चुप रहना ही अच्छा है। **– अरस्तु**

❖ पड़ोसी से प्रेम करने वाला विपत्ति में भी सुखी रहता है जबकि पड़ोसी से वैर करने वाला सम्पत्ति में भी दुखी रहता है।

❖ जो कार्य आपके सामने है उसे शीघ्रता एवं निष्कपट भाव से करना ही कर्तव्य है। यही आपके अधिकार की पूर्ति है।

– गेटे

❖ जब-जब हम गिरते हैं हमें आगे चलने का तजुर्बा हो जाता है। **– सुकरात**

❖ संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियां हैं। शिक्षा सबसे बढ़कर है। **– निराला**

❖ बिना अनुभव शाब्दिक ज्ञान अंधा है।

– विवेकानंद

❖ अतिथि सत्कार से मनुष्य देवत्व को प्राप्त करता है। **– बाइबिल**

❖ कर्म वह दर्पण है जिसमें हमारा प्रतिबिम्ब दिखता है। **– विनोबा भावे**

❖ बुद्धि पंगु है श्रद्धा सर्व समर्थ।– परमहंस

❖ जो दूसरो के लिए जीते हैं वे ही वास्तव में जीवित हैं। **– बाल गंगाधर तिलक**

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

ज्योति-पर्व

गुलदस्ते दीपों के लेकर,
रात दीवाली की है आई।

अंधकार को मिटा रही है,
रंग-बिरंगी फैली लड़ियां।
नई उमंगे जगा रही हैं,
हँसी-खुशी की सुन्दर घड़ियां।।

हर द्वारे पर चहल पहल है,
घर-घर मिलती प्यार-बधाई।

दो हाथों से खील-बताशे,
मोटू लल्ला लूट रहे हैं।
देख ढेर सी पड़ी मिठाई,
मन में लड्डू फूट रहे हैं।।

उछल-कूद है धूम धड़ाके,
हर मुख पर है मस्ती छाई।

फुलझड़ियों ने खोले खाते,
अनारों ने धूम मचाई।
कितने रंग बिखेर रही है,
ज्योति-पर्व की यह तरुणाई।।

कहानी : अंजू जैन

अंधकार के बदले रोशनी

सोहनपुर के घने जंगलों में खरगोशों की एक बस्ती थी, उमंगपुर। नाम के अनुरूप ही वहाँ सब खरगोश आपस में मिल-जुलकर आनन्दपूर्वक रहते थे। हाँ, एक था टिमकू खरगोश जो उसी बस्ती में रहता था। वह कुछ अलग ही स्वभाव का था। स्वार्थी तो था ही दूसरों को परेशान करने में भी उसे बड़ा मजा आता था। हमेशा सबकी चुगली इधर-उधर करता रहता था। बस्ती में सभी खरगोश उससे परेशान थे। पर करें क्या? सबने तंग आकर टिमकू से बोलचाल बन्द कर दी। कहते हैं उसकी इन हरकतों ने उसकी माँ को बीमार कर दिया था और अब तो वह बेचारी इस दुनिया में ही नहीं रही। टिमकू अकेला था। दिनभर मटरगश्ती करता और कहीं न कहीं किसी न किसी तरह से अपने खाने-पीने का जुगाड़ भी कर लेता था।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी उमंगपुर के निवासियों में दीपावली का त्योहार मनाने का

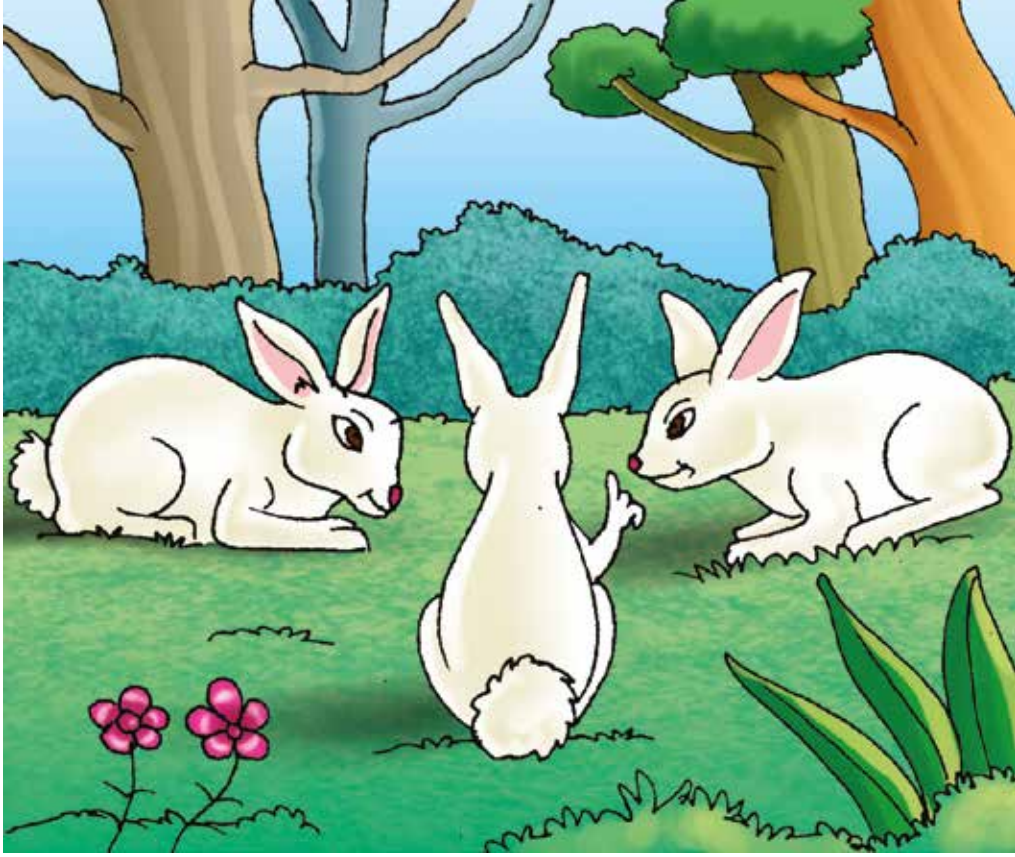

उत्साह बहुत था। काफी समय पहले से ही सब तैयारियों में लग गये थे। दीपावली का पर्व सब खरगोश मिलकर हँसी-खुशी मनाते थे। एक-दूसरे के घर भी जाते थे, बधाई देने।

और हाँ, टिमकू का जो काम दीपावली पर होता था ... किसी खरगोश के बच्चे की पूँछ में पटाखे बांध देना, वह किसी खरगोश के पास पटाखों की लड़ी में आग लगाकर फेंक देता और कभी किसी के घर से मुंडेर पर जल रहे दीपकों को उठाकर कहीं और रख आता। सभी जीव उसकी इन हरकतों से तंग थे पर करें क्या... कोई था ही नहीं उसके परिवार में किससे उसकी शिकायत करे। कोई-कोई तो उसकी पिटाई भी कर देता था। पर वह कहाँ बाज आने वाला था। ढीठ जो बन चुका था।

पर इस बार टिमकू दीपावली से एक दिन पहले बीमार पड़ गया। बीमार भी इतना कि उठा भी नहीं जा रहा था। उसे कमजोरी काफी आ गयी थी। बुखार के कारण बस्ती भर में जहाँ खुशियाँ मनायी जा रही थी, पटाखे, फुलझड़ियाँ छोड़ी जा रही थीं, बेचारा टिमकू खाट पर अकेला पड़ा कराह रहा था। उसके गलत व्यवहार के कारण कोई उसकी खबर तक लेने नहीं आया। वह भूखा-प्यासा पड़ा रोता रहा।

दीपावली के दिन भी उसके घर में अंधकार था। उसमें न तो हिम्मत थी कि वह उठकर एक दीपक तक जला सके और न ही साधन था कि कहीं से दीपक जुटा सके।

मन ही मन वह पछता रहा था कि काश! उसने बस्ती में सबसे अच्छा व्यवहार किया होता तो उसे त्योहार वाले दिन इस तरह अकेले न पड़े रहना पड़ता। सब उसका हालचाल पूछने आते।

वह सोच ही रहा था कि अचानक उसने कुछ आहट-सी सुनी। अरे ये तो मनकू खरगोश था जो उसके पड़ोस में ही रहता था।

अरे टिमकू यह क्या? आज त्योहार के दिन भी घर में अंधेरा। क्या बात है भई?

–मैं बीमार हूँ, उठ नहीं सकता।– टिमकू धीरे से बोला।

–हाँ मैं भी सोच रहा था कि तुम्हारे घर में आज कैसे सुनापन व अंधेरा है। कल से तुम

दिखे भी नहीं। मैंने सोचा जरूर कोई गड़बड़ है। चलकर देखना चाहिए।

खैर मैं अभी आता हूँ। थोड़ी देर में मनकू लौटा, उसके हाथ में दीपक व कुछ खाने-पीने का सामान था। मैं जला देता हूँ टिमकू तुम्हारे घर में दीपक। हाँ, सुबह से तुमने खाया-पिया भी नहीं होगा। लो खा लो कुछ।

–तुम... क्यों इतना कर रहे हो मेरे जैसे बुरे स्वभाव वाले के साथ। मैंने तो पिछले वर्ष तुम्हारी मुंडेर पर जल रहे दीपकों को उठाकर कहीं ओर रख दिया था। मैंने तुम्हारे घर में अंधकार किया और तुम मेरे घर को उजाले से भर रहे हो। कहते-कहते रो पड़ा था टिमकू।

–नहीं, दोस्त रोते नहीं, मैं तुम्हारा पड़ोसी हूँ। फिर ये कैसे देख सकता है कि मेरा घर तो प्रकाश से जगमगाये और तुम्हारा घर अंधकार में डूबा रहे।

–मुझे माफ कर दो दोस्त... मुझे माफ कर दो, अब भविष्य में मैं अच्छा बनने की कोशिश करूँगा, कभी भी बुरे काम नहीं करूँगा।

–दोस्त, अंधकार के बदले तुमने जो रोशनी दी है उसने मेरे घर के साथ-साथ मेरे मन को भी प्रकाशवान कर दिया है।

–सच।

–हाँ, सच बिल्कुल सच। अब मुझसे किसी को कोई शिकायत नहीं रहेगी।

–आँखों के आंसुओं को पोंछते हुए टिमकू ने कहा।

बाल कविता :
राजकुमार जैन 'राजन'

आगे बढ़ते जाना

चींटी समय न खोती व्यर्थ,
समझाती जीवन के अर्थ।

कितना श्रम ये करती है,
लेकिन कभी न थकती है।

चलती रहती सदा निरन्तर,
रुकती कभी नहीं है पथ पर।

जोड़-जोड़कर दाना-दाना,
करती जमा बहुत सा खाना।

चीनी इसको बहुत सुहाती,
कड़वाहट के पास न जाती।

चलती अपने दल के संग,
कभी कतार न करती भंग।

इसका तो ये मंत्र पुराना,
आगे हरदम बढ़ते जाना।

बाल कविता : घमंडीलाल अग्रवाल

तितली

फूल-फूल पर डोले तितली,
मन की गठरी खोले तितली।

रंग मिले हैं प्यारे-प्यारे,
पीछे भगते बच्चे सारे।

बगिया-बगिया उपवन-उपवन,
बिखराती मुस्कानों का धन।

पास न लाती जरा उदासी,
चुस्ती तन में अच्छी-खासी।

पंखों पर हमको बैठाओ,
नीलगगन की सैर कराओ।

क्या खाती हो, कितना खाती,
हमें समझ यह बात न आती।

माँ ने है चिट्ठी भिजवाई,
घर आ ले लो दूध-मलाई।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
– अजय कालड़ा

वह अपनी प्रजा की सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखता था। एक दिन वह वेश बदल कर अकेले ही नगर में घूमने निकल पड़ा।
शाम को जब वह वापस लौटा तो उसने अपने मंत्रियों और कर्मचारियों को बुलाया और उन्हें हर तरफ़ गंदगी होने के लिए खूब डांट लगाई।
राजा को नगर में गंदगी देखकर बहुत दुख हुआ। राजा जानता था कि गंदगी से कई तरह की बीमारियां फैल सकती हैं। उसने उसी समय सभी मंत्रियों को हाथों पूरे नगर की सफ़ाई करने का आदेश दिया।
सच दादा जी, राजा को सफाई बहुत पसंद थी?

सभी मंत्री घबरा गये। पूरे नगर की सफाई!

फिर क्या हुआ दादाजी? क्या मंत्रियों ने खुद सफाई की?

खुद तो नहीं की। लेकिन एक मंत्री ने इसके लिए राजा को एक बहुत अच्छा सुझाव दिया।

क्या सुझाव, दादा जी?

महाराज! मेरा मानना है कि हमें हमेशा स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए हमें हर रोज सफाई करनी चाहिए। महाराज, आज अगर हम सफाई कर भी देंगे तो कल फ़िर प्रजा के लोग कूड़ा फेंक कर गंदगी फैला देंगे।

महाराज, मेरा सुझाव है कि आप प्रजा को एक सभा में बुलाकर सफाई का महत्व बताएं व उनकी सुविधा के लिए कुछ सफाई कर्मचारी भी नियुक्त करवाएं, जिससे नित्य सफाई हो सके।

राजा को यह बात बहुत पसंद आई। उसने एक सभा बुलाने का आदेश दिया। राजा ने लोगों को साफ़–सफाई का महत्व समझाया और उसके बाद से पूरा नगर हर समय चमकने लगा।

बच्चों, यह कहानी हमें यह शिक्षा देती है कि हमें केवल अपने घर की ही नही बल्कि पूरे मोहल्ले व पूरे शहर की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। न तो हमें कूड़ा फैलाना चाहिए और न ही किसी को फैलाने देना चाहिए।

ठीक कहा आपने दादा जी!

बच्चों, अब तो सोने चलोगे ना तुम।

शुभ रात्रि, बच्चों!

जी दादा जी, शुभ रात्रि!

जानकारीपूर्ण लेख : दीपांशु जैन

हाथी

बुद्धिमान और शरारती भी

हाथी एक बुद्धिमान जानवर है। ये अपने शिशुओं को नियमानुसार शिक्षा देते हैं। संकट के समय ये एक-दूसरे की मदद करते हैं, वृद्धों की चिन्ता भी करते हैं। हाथियों के स्वभाव की कुछ घटनाएं यहाँ प्रस्तुत हैं।

केनिया में हाथियों का एक बहुत बड़ा झुंड जा रहा था। एक शिकारी ने इस झुंड पर गोली चला दी। एक हाथी जख्मी होकर गिरा और लोट लगाने लगा। अपने साथी को तड़पता हुआ देख उस झुंड में से दो हाथी उसकी सहायता के लिए आए। उन्होंने दोनों तरफ बाजुओं से अपनी सूंड घायल हाथी के पेट के नीचे डाली और वे उसे उठाकर ले चले। बीच-बीच में वे उसे नीचे भी रखते थे। इस प्रकार वे उस घायल हाथी को दो मील दूर तक ले गये और उसे एक सुनसान स्थान पर रखा। पीछे-पीछे वह शिकारी भी आया। वह क्या देखता है कि मदद करने वाले दोनों हाथी उस जख्मी हाथी की सेवा-सुश्रुषा कर रहे हैं। शिकारी का दिल पिघल गया। उसने दुबारा गोली नहीं दागी।

जिस प्रकार बात न मानने पर या किसी तरह की गलती करने पर माँ अपने बच्चों को डांटती-फटकारती है उसी प्रकार का प्रसंग हाथियों में भी देखने को मिलता है।

अफ्रीका के लेक जॉर्ज तालाब के समीप हाथी का एक बच्चा झुंड में से अलग हो गया और एक चौड़े व गहरे गड्ढ़े के किनारे पर खड़ा होकर उसमें झांकने लगा। हथिनी ने यह देखा तो एक चीत्कार करके उसे वापस आने के लिए कहा। किन्तु हाथी का बच्चा हथिनी की बात न मानते हुए उस गड्ढ़े में और ज्यादा झुककर अपना प्रतिबिम्ब पानी में देखने लगा। उसके पैरों के नीचे की मिट्टी सरकी और वह चिंघाड़ते हुए गड्ढ़े में जा गिरा। बच्चे की चीत्कार सुनकर दो हथिनी वहाँ दौड़ती हुई आई। उनमें से एक आगे के पैर के घुटने टेककर किनारे पर खड़ी थी और दूसरी पानी में उतरी। हथिनी ने गोता खा रहे बच्चे को उठाया और किनारे की हथिनी की सूंड में दिया। बाद में उन दोनों हथिनियों ने उस बच्चे के पेट से पानी निकालने की प्रक्रिया आरम्भ की। थोड़ी देर में बच्चा ठीक हुआ व उठकर चलने लगा। एक हथिनी ने सजा के रूप में उस बच्चे को अपनी सूंड से दो तमाचे जमाए।

हस्तिदंत का व्यापार करने वाले एक शिकारी को अफ्रीका के जंगल में भ्रमण करते हुए हाथियों का एक बहुत बड़ा झुंड दिखाई दिया। उस झुंड में टस्कर हाथी भी थे। शिकारी ने दो टस्कर हाथियों पर गोलियां दागीं। घायल अवस्था में भी

वे भागे लेकिन कुछ दूर जाकर गिरकर मर गये। बाद में शिकारी उस स्थान पर आया तो देखा उनके दांत अपने स्थान पर नहीं थे। शिकारी सोच में पड़ गया कि दांत कहाँ गायब हो गये? बाद में जंगलवासियों से मालूम पड़ा कि टस्कर जब मर जाता है तब अन्य हाथी उसके दांत उखाड़ ले जाते हैं। शिकारियों का मनोरथ पूरा न हो ऐसी हाथियों की धारणा रहती है।

हाथी बदला लेने वाला प्राणी भी है। ऐसे उदाहरण भी अनेकों हैं। एक संस्था के किसी व्यक्ति द्वारा परेशान किए जाने पर एक हाथी ने उस व्यक्ति से चार वर्ष बाद बदला लिया। उसने उस व्यक्ति को दीवार के नीचे दबाकर मार डाला। एक हाथी ने उसका भोजन चुराकर ले जाने वाले महावत की छाती पर पैर रखकर उसे मार डाला।

हाथी को देखने के लिए जाना व मजाक में उसे कंकर फेंककर मारना एक आदमी का रोज का खेल था। एक दिन महावत के साथ घूमकर आते समय हाथी अपनी सूंड में एक बड़ा पत्थर लाया व उस पत्थर को अपने ठिकाने पर रख दिया। दूसरे दिन वह कंकर मानने वाला आदमी जैसे ही आया हाथी ने अपने पास का वह पत्थर फेंककर मारा। उस आदमी का सिर फूट गया और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

हाथी कभी-कभी मजाक भी करते हैं। एक हाथी को पानी पीते समय यदि कोई आ जाए तो उस पर पानी का फव्वारा छोड़ने की आदत थी। एक हाथी की आदत थी कि यदि कोई आदमी सिर पर साफा बांधकर उसके पास आता तो वह साफा खोलकर अपने सिर पर रख लेता। यह काम वह चुपके से करता था। ऐसा ही एक हाथी था। जब वह प्रसन्न रहता था तब अपने महावत को सूंड से गुदगुदी किया करता था। अफ्रीका के जंगल का एक हाथी जंगल के रास्ते से गुजरने वाली मोटरों के पीछे भागता था। इस प्रकार वह मोटर में बैठे आदमियों को डरा दिया करता था परन्तु उसने कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाई।

प्रेरक-प्रसंग : डॉ. सत्यप्रकाश वर्मा

दृढ़ निश्चय का फल

गुरुजी विद्यार्थी को बार-बार समझा रहे थे। पर विद्यार्थी को पाठ समझ में नहीं आ रहा था। गुरु जी खीझ उठे। उन्होंने विद्यार्थी से कहा– जरा अपनी हथेली तो दिखाओ, बेटा। विद्यार्थी ने अपनी हथेली गुरु जी के आगे कर दी।

हथेली देखकर गुरु जी बोले– बेटा! तुम घर चले जाओ। आश्रम में रहकर व्यर्थ अपना समय बर्बाद कर रहे हो। तुम्हारे भाग्य में विद्या नहीं है।

–क्यों गुरु जी!– शिष्य ने पूछा।

–क्योंकि तुम्हारे हाथ में विद्या की रेखा नहीं है।– गुरु जी ने कहा।

गुरु जी ने एक दूसरे विद्यार्थी की हथेली उसे दिखाते हुए कहा– यह देखो। यह है विद्या की रेखा। यह तुम्हारे हाथ में नहीं है। इसलिए तुम समय नष्ट न करो, घर जाओ। वहाँ अपना काम देखो।

विद्यार्थी ने जेब से चाकू निकाला, जिसका प्रयोग वह दातुन तोड़ने के लिए किया करता था। उसकी पैनी नोंक से उसने अपने हाथ में एक गहरी लकीर बना दी। हाथ लहु-लूहान हो गया। तब वह गुरु जी से बोला– मैंने अपने हाथ में विद्या की रेखा बना दी है, गुरु जी।

गुरु जी ने विद्यार्थी को गले से लगा लिया और बोले– तुम्हें विद्या सीखने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती, बेटा। दृढ़-निश्चय और परिश्रम हाथ की रेखाओं को भी बदल देते हैं।

वह विद्यार्थी था– पाणिनि, जिसने बड़े हो. कर विश्व-प्रसिद्ध व्याकरण के ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' की रचना की। सदियां बीत जाने पर भी विश्व की किसी भी भाषा में ऐसा उत्कृष्ट और पूर्ण व्याकरण का ग्रंथ अब तक नहीं बना।

प्रेरक कथा : कमल सौगानी

क्या चोर को भूख नहीं लगती?

उन दिनों सर्दी का तेज मौसम था। गाँधी जी अपने दो साथियों के साथ पास के गाँव में किसी धार्मिक समारोह में गये हुए थे। साबरमती के आश्रम में 8-10 सदस्य थे। चूंकि सर्दी तेज थी। इस कारण सभी सदस्य रजाई कम्बलों में दुबककर खर्राटे भर रहे थे। तभी एक चोर को विदित हुआ ''आश्रम में बापू तो है नहीं, चलो कुछ रुपये पैसे या कुछ चीजें चुरा लाते हैं।'' मौका बढ़िया है। बस यही सोचकर वह दबे पांव आश्रम की ओर पहुँचा। चुपचाप दरवाजा खोला और बापू के कमरे में जा घुसा। कमरे में चिमनी जल रही थी। उसने चिमनी को हाथ में लेकर इधर-उधर ताकना झांकना शुरु कर दिया। तभी उसकी नजर एक सन्दूक पर अटकी, लेकिन ताला लगा था। उसने एक पत्थर से ताला तोड़ने की कोशिश की। ठक्-ठक् की आवाज सुनकर अन्दर के कमरे में सो रहे सदस्य जाग उठे। उन्होनें एक छेद मे से देखा– कोई चोर बापू के सन्दूक का ताला तोड़ने की कोशिश कर रहा है।

सदस्यों ने आपस में गुपचुप बातें की और चारों तरफ से दबे पांव निकलकर चोर को पकड़ लिया। चोर के दो चार चांटे मारे और रस्सी से बांधकर एक कमरे में बन्द कर दिया।

दूसरे दिन सुबह जब गाँधी जी साबरमती आश्रम में लौटे तो आश्रम के सदस्यों ने रात वाली घटना का जिक्र करते हुए उस चोर को पेश किया।

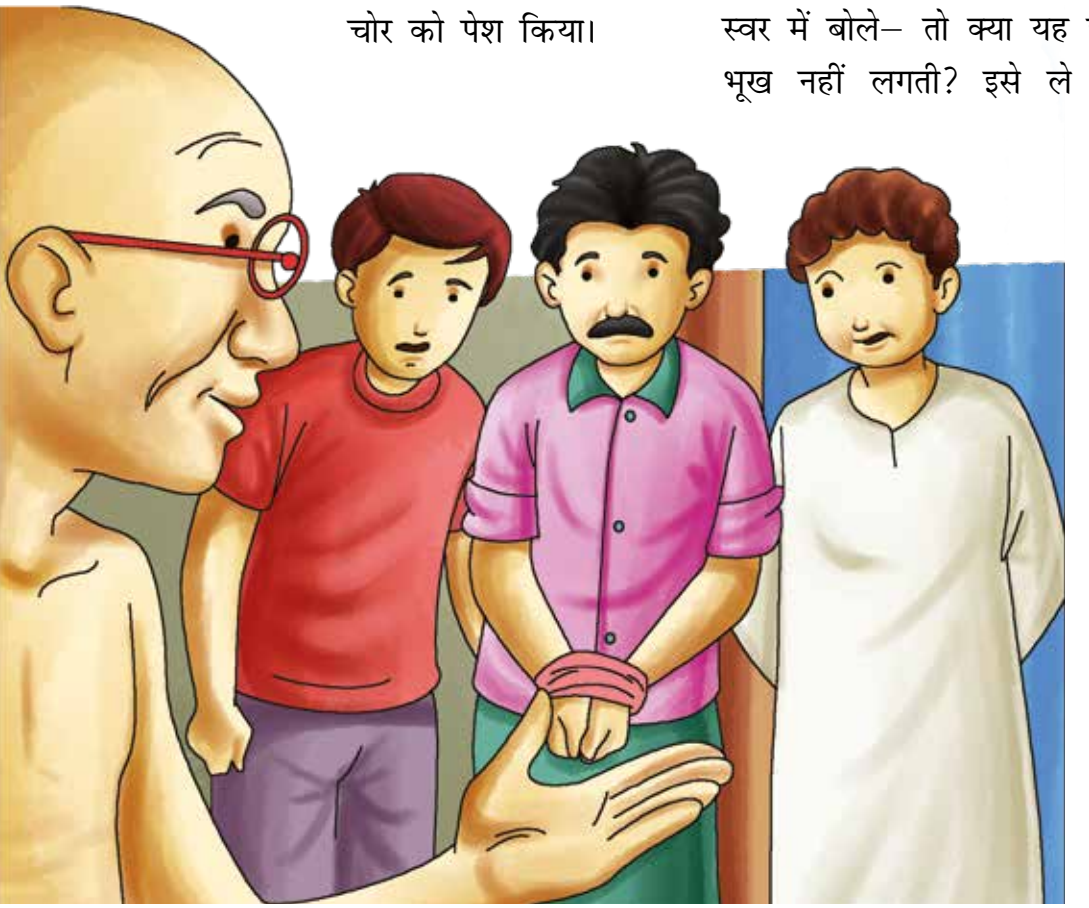

गाँधी जी ने उस चोर को बड़े ध्यान से देखा– वह सिर झुकाये आतंकित खड़ा था कि कहीं मुझे पुलिस के हवाले न कर दे।

गाँधी जी ने उस चोर से पूछा, ''क्यों नौजवान! तुमने नाश्ता किया?''

चोर की तरफ से कोई उत्तर न मिलने पर गाँधी जी ने व्यवस्थापक की ओर प्रश्न भरी मुद्रा में देखा।

व्यवस्थापक ने कहा, ''बापू, यह तो चोर है, आप उसके नाश्ते की बात पूछ रहे हो?''

अपने व्यवस्थापक के मुख से ऐसी बात सुनकर गाँधी जी का चेहरा गंभीर हो गया। वे दु:ख भरे स्वर में बोले– तो क्या यह इंसान नहीं है? इसे भूख नहीं लगती? इसे ले जाओ और पहले नाश्ता कराओ।

गाँधी जी के मुख से ऐसी बात सुनकर चोर की आँखों में प्रायश्चित के आंसू बहने लगे। वह गाँधी जी के चरणों में गिरकर बोला, ''बापू। मुझे क्षमा कर दीजिएगा। अब मैं कभी चोरी नहीं करूंगा और अपनी मेहनत से ही सच्ची कमाई करूंगा।''

गाँधी जी ने उस चोर को हँसते-हँसते आजाद कर दिया।

बाद में इस नौजवान चोर ने आश्रम में फुर्सत के समय गाँधी जी की बहुत सेवा की और स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में जी-जान से जुट गया।

कविता : डॉ. अलका अग्रवाल

जल प्रदूषण

गंगा-युमना हैं उत्तर में,
कृष्णा-कावेरी दक्षिण में।
नदियां देती हमको नीर,
बसे नगर हैं इनके तीर।।

नदियां जीवनदायी हैं,
अमृत रस भर लायी हैं।
जननी सम वरदायी हैं,
जीवन में सुख लायी हैं।।

जीवन इनका जीवन देता,
खेतों में सोना है होता।
इनके बिना नहर ना बांध,
कैसी खेती, कैसे गाँव।।

बदला समय विकास हुआ,
या फिर कहो विनाश हुआ।
पॉलिथीन का दानव आया,
फैक्ट्रियों ने विष फैलाया।।

गंगा माँ का मन रोता है,
मानव क्यों कृतघ्न होता है।
कहाँ विवेक कहाँ है दृष्टि,
घोर प्रदूषण नहीं है वृष्टि।।

अब भी अगर न मानव जागा,
अपने कर्तव्यों से भागा।
नदी नीर न निर्मल होगा,
कैसे सबको जीवन देगा।।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

सदुपयोग की सीख

झुनूं नगर में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो सेठ नागरमल को नहीं जानता हो। एक बार उसके पास एक भूला-भटका लड़का आ पहुँचा। आते ही वह बोल उठा, ''मैं दो दिन से भूखा हूँ। काम करना चाहता हूँ। आप कोई काम दे सकें तो बहुत मेहरबानी होगी।''

सेठ जी को उस लड़के पर दया आ गई। उसने लड़के से पूछा, ''क्या नाम है तुम्हारा?''

''बलबीर।'' वह झट बोला।

''क्या तुम्हारे माँ-बाप नहीं हैं?'' सेठ जी ने अगला सवाल किया।

''मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है।'' लड़का मायूस हो उठा।

''उदास मत हो।'' सेठ जी ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा, ''मैं तुम्हें काम ही नहीं, माँ-बाप का प्यार भी दूँगा। चलो, पहले भोजन कर लो।''

सेठ जी ने बलबीर को भोजन कराया। फिर कहा, ''आज से तुम मेरा छोटा-मोटा घरेलू काम करोगे।''

''ठीक है।'' बलबीर खुश होकर बोला।

सेठ जी के सद्व्यवहार ने बलबीर के जीवन की घोर निराशा को आशा में बदल दिया।

एक दिन सेठ जी ने बलबीर से कहा, ''जरा देखो इधर, मेरी यह कमीज कितनी गंदी हो गयी है। इसे साबुन से साफ कर दो।''

''अभी कर देता हूँ।'' कहकर बलबीर ने सेठ जी के हाथ से कमीज ले ली। फिर कमीज साफ करके उसे धूप में सुखा दिया।

संध्या समय उस कमीज को देखकर सेठ जी बलबीर से बोला, ''यह कमीज पूरी तरह साफ नहीं हुई है और साफ होनी चाहिए।''

''आगे से इस बात का ख्याल रखूंगा।'' बलबीर ने नम्रता से जवाब दिया।

कुछ दिनों के बाद सेठ जी ने बलबीर को अपनी धोती साफ करने के लिए दी। इस बार

बलबीर ने खूब मन लगाकर धोती साफ की। जब सेठ जी ने धोती की सफाई देखी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह बोल उठा, ''वाह! आज तो तूने सही में धोती की खूब अच्छी सफाई की है। जी चाहता है तुम्हें कुछ ईनाम दूँ।''

अभी सेठ जी बलबीर को ईनाम देने की बात सोच ही रहे थे कि अचानक उसकी निगाह साबुन की टिकिया पर चली गयी। फिर उसका चेहरा एकाएक उदास हो उठा। वह बुझे स्वर में बोला, ''बेटा बलबीर, धोती तो तूने जरूर झकाझक साफ की है लेकिन एक गड़बड़ी कर दी है।''

''वह क्या?'' उत्सुक हो उठा बलबीर।

''सफाई के अनुपात में तूने साबुन कुछ ज्यादा खर्च कर दिया है और यह फिजूलखर्च है। भविष्य में इस बात पर भी ध्यान रखोगे।''

बलबीर क्या जवाब देता। उसने झट इतना ही कहा, ''अब ऐसी शिकायत का अवसर नहीं दूँगा।''

सेठ जी उसके जवाब से सन्तुष्ट हो गये।

दो माह और गुजरे। किसी जरूरी काम से एक दिन सेठ जी को बाहर जाना था। हड़बड़ी में उसने बलबीर को आदेश दिया, ''बेटा, धोबी आज कपड़े धोकर नहीं लाया है और मुझे बाहर जाना जरूरी है। ऐसे में मेरे गंदे कपड़े आज तुम्हीं झटपट साफ कर दो।''

''तुरन्त कर देता हूँ।'' कहकर बलबीर सेठ जी की कमीज और धोती साफ करने लगा। सेठ जी भी पास ही बैठकर सेफ्टी रेजर से अपनी दाढ़ी बनाने बैठ गये। दाढ़ी बनाने के बाद सेठ जी ने बलबीर के द्वारा साफ किये कपड़ों को देखकर कहा, ''आज तूने कपड़ों की सफाई तो अच्छी तरह की है और साबुन भी जरूरत के अनुसार ही खर्च किया है। फिर भी एक फिजूलखर्ची तूने की है।''

''कैसी फिजूलखर्ची?'' बलबीर को सेठ जी की बात समझ में बिल्कुल नहीं आयी।

सेठ जी ने उसका ध्यान खींचा, ''तूने जरूरत से ज्यादा इस बार पानी खर्च कर दिया है। आगे से इस बात का भी ख्याल रखोगे।''

''जरूर।'' बलबीर इतना ही कह सका।

समय गुजरता चला। दिवाली से एक दिन पहले सेठ जी ने बलबीर को कहा, ''मेरे सभी कपड़े तो धुलकर धोबी के यहाँ से आ गये हैं। सिर्फ दो गंजियां गंदी हैं। तू इन्हे झटपट साफ कर दे। कल दिवाली के दिन गंदी गंजी कैसे पहनूँगा।''

''हाँ, हाँ क्यों नहीं?'' बलबीर तैयार हो गया। वह गंजियां साफ करने नल के पास बैठ गया।

गंजियां साफ हुई तो सेठ जी ने उन्हें देखकर कहा, ''सभी कुछ ठीक है। कपड़े साफ हुए हैं। साबुन और पानी भी तूने हिसाब से खर्च किये हैं।

''मगर ...''

... अब मगर क्या? बलबीर हैरान हो उठा।

सफाई में तूने समय ज्यादा लगाया है। यह भी जान ले, यह भी एक प्रकार की फिजूलखर्ची है जो ठीक नहीं है। ''याद रहे, जीवन में तुम्हें वास्तविक सफलता तभी मिल सकती है, जब इन छोटी-छोटी समझी जाने वाली फिजूलखर्ची से अपने को बचाओगे। जीवन में हर चीज मूल्यवान है। अतएव उनके सदुपयोग की सीख को जितनी गम्भीरता से अपनाओगे, जीवन में उतना ही आगे बढ़ सकोगे।'' सेठ जी ने कहा।

''हाँ।'' बलबीर ने सेठ जी की नसीहत मान ली।

विशेष लेख : नीलम ज्योति

हम मधुमक्खियां

गुनगुनाती-मंडराती मैं बाग-बगीचों में डोलती फिरती हूँ। कभी इस फूल के ऊपर कभी उस फूल के ऊपर। पहचाना मुझे? मैं हूँ शहद की मक्खी-मधुमक्खी।

मैं अपना भोजन फूलों के मीठे रस के रूप में लेती हूँ। पर सारे का सारा रस स्वयं ही नहीं पीती। मैं अपने छत्ते में इसे मधु के रूप में जमा भी करती हूँ। जानते हो क्यों? अपने नन्हें-मुन्ने बच्चों के लिए। यह मधु तुम्हें भी तो भाता है। इसी मधु को पाने के लिए तुम मुझे पालते हो। पर क्या तुम्हें पता है कि यह मधु कैसे बनता है?

मैं फूलों से जो मीठा रस चूसती हूँ उसे अपने मुँह में जमा कर लेती हूँ। मेरे मुँह की लार इसमें मिलती है। लार का पतला रस सुगंधित गाढ़े मधु में बदल जाता है। यह मधु पौष्टिक और बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

फूलों का रस चूसते समय पराग तथा फूलों के कुछ भाग मेरे पेट में चले जाते हैं। इनसे मेरे पेट में मोम बनता है। इस मोम को मैं अपने पेट की त्वचा की थैलियों में जमा करती हूँ। अपने रहने के लिए मैं इसी मोम से छत्ता भी बनाती हूँ।

हम मधुमक्खियां बड़ी ही कुशल कारीगर होती हैं। क्या कभी तुमने हमारे छत्ते को ध्यान से

देखा है? उसमें एक ही आकार के 6 कोनों वाले कई कमरे होते हैं। इन सैकड़ों कमरों में हम मधु जमा करती हैं। शेष कमरों में हमारी रानी मक्खी अण्डे देती है जिनसे हमारा परिवार बढ़ता है। परिवार बढ़ने से छत्ते में भीड़ बढ़ जाती है। रानी मक्खी एक नया घर बनाने की सोचती है। वह छत्ता तोड़कर बाहर निकल जाती है। अधिकतर मक्खियां रानी के साथ-साथ ही उड़ती हैं। पुराने छत्ते में इस बीच एक नई रानी जन्म ले लेती है।

हम मधुमक्खियों को अकेले रहने और अकेले खाने की आदत नहीं होती। हम सामाजिक प्राणी हैं। हम बहुत बड़ा परिवार बनाकर रहती हैं। ठीक वैसे ही जैसे मनुष्य रहता है। हमारी दुनिया में नर से अधिक महत्वपूर्ण मादा होती है। केवल रानी अण्डे देती है। हमारे काम आपस में बंटे रहते हैं। सभी मधुमक्खियां कुछ न कुछ काम करती हैं।

अब हमारे शरीर के कुछ निराले अंगों के बारे में सुनो। हमारी दो आँखें होती हैं। ये दोनों आँखें सिर के दोनों ओर होती हैं। प्रत्येक आँख में लगभग 6 हजार लेंस होते हैं। नाक और कान के स्थान पर हमारे सिर के आगे दो जादुई डंडे लगे होते हैं। तुम इन्हें 'एंटीना' कहकर पुकार सकते हो। ये सूंघने और सुनने में सहायता करते हैं। हमारे पैर भी कई तरह के काम करने के लिए बने हैं। हम इनसे सफाई, कटाई तथा किसी चीज को पकड़े रखने का काम करती हैं। हमारे सबसे पीछे के दो पैरों में फूलों का पराग जमा करने के लिए थैले भी होते हैं।

मेरे शरीर में एक अंग और भी होता है जिससे तुम बहुत डरते हो। वह है मेरा डंक। जब मैं इस डंक को तुम्हारे शरीर में चुभोती हूँ तो तुम्हें बहुत दर्द होता है। काटे हुए भाग में सूजन भी आ जाती है। ऐसा डंक में पाये जाने वाले एक अम्ल के कारण होता है।

मैं तुम्हें डंक नहीं मारना चाहती। लेकिन संकट आने पर कभी-कभी ऐसा करना पड़ता है। तुम्हें डंक मारने से मेरी बड़ी हानि होती है। मेरा डंक मछली पकड़ने के कांटे के समान होता है। यह तुम्हारे शरीर में घुस तो आसानी से जाता है पर निकल नहीं पाता। डंक को निकालने के लिए जब जोर लगाती हूँ तो वह टूट जाता है। इससे कुछ देर बाद मेरी मृत्यु हो जाती है।

अब मैं तुम्हें एक रोचक बात बताती हूँ। पुराने जमाने में लोग मूल्यवान वस्तुएं मेरे छत्ते में छिपा कर रखते थे। वे ऐसा क्यों करते थे? वे ऐसा इसलिए करते थे कि कोई उन्हें चुरा न ले। उस जमाने में तिजोरियां नहीं हुआ करती थीं।

तो देखा तुमने! मैं कितनी रोचक और उपयोगी जीव हूँ। मैं अपनी कहानी यही समाप्त करती हूँ।

कहानी : साबिर हुसैन

राजू की दीवाली

राजू आज बहुत खुश था। उसकी जेब में पूरे दो सौ रुपये थे। उसे विश्वास था कि इन दो सौ रुपयों से गीता की फ्रॉक, मिठाई तथा फुलझड़ी का डिब्बा आ जाएगा। पिछले दिनों मम्मी बहुत बीमार हो गई थी। उनके इलाज में बहुत पैसा खर्च हुआ था।

एक दिन जब वह स्कूल से आया तो उसने पापा को मम्मी से कहते सुना था– "पैसा तो है नहीं, बच्चे दीवाली कैसे मनाएंगे?"

–कर्ज लेकर दीवाली मनाना ठीक नहीं; मैं राजू और गीता को समझा लूंगी।– मम्मी ने कहा।

उसी दिन उसने सोच लिया था कि वह पापा से किसी चीज़ के लिए जिद्द नहीं करेगा लेकिन वह जानता था कि उसकी छोटी बहन गीता नई फ्रॉक और फुलझाड़ियों के लिए जरूर रोएगी।

एक दिन वह बाजार गया। वहाँ उसने रंग-बिरंगी कंदीले बिकती देखीं। तभी उसने सोच लिया कि वह कंदीले बनाकर बचेगा। उसके पड़ोस में रहने वाले रहमान चाचा भी कंदीले बनाकर बेचते थे। उसने भी रहमान चाचा से कंदीले बनानी सीखीं। उसने रहमान चाचा से कहा कि वह भी उनके घर बैठकर कंदीले बनाएगा। रहमान चाचा तुरन्त तैयार हो गये। उसने अपनी गुल्लक में से पैसे निकालकर कागज़ आदि कंदीले बनाने का सामान खरीदा और रहमान चाचा के घर पर बैठकर कंदीले बनाने लगा। उन कंदीलों को वह महेश अंकल की दुकान पर बिक्री के लिए रख आया।

कंदीले बिक जाने पर वह पुन: कागज़ आदि लाकर कंदीले बनाकर बिक्री के लिए दे आता था। इस प्रकार उसने दो सौ रुपये बचा लिये। वह कंदीले बनाकर बेचता है, यह बात रहमान चाचा और महेश अंकल के अतिरिक्त घर में और किसी को पता नहीं था।

ब्रेक लगने की आवाज़ के साथ ही चीख सुनकर राजू का ध्यान सड़क की ओर गया। उसने देखा एक आदमी ट्रक की टक्कर से घायल पड़ा था और ट्रक तेजी से भागा जा रहा था। कुछ ही देर में वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई किन्तु कोई व्यक्ति उस घायल आदमी को डॉक्टर के पास नहीं ले जा रहा था। राजू को लगा यदि इस आदमी का ऐसे ही खून निकलता रहा तो वह मर जाएगा।

–इसे डॉक्टर के पास ले चलो, इसका बहुत खून बह रहा है।– राजू बोला।

–तुम्हें बहुत हमदर्दी है तो तुम ही ले जाओ।– एक आदमी बोला।

उस आदमी की बात सुनकर राजू को गुस्सा बहुत आया लेकिन वह चुप ही रहा। उसने एक टैक्सी को रोका और ड्राइवर की सहायता से उस घायल आदमी को टैक्सी की पिछली सीट पर लिटाया और अस्पताल पहुँचा दिया। उसने तुरन्त घायल आदमी को अस्पताल में भर्ती कराया। डॉक्टर ने जो इंजेक्शन, दवाएं बाजार से लाने के लिए पर्चा दिया तो उसने तुरन्त वे दवाएं लाकर दीं। इसमें उसके सब रुपये खर्च हो गये। जब डॉक्टर ने राजू को बताया कि वह घायल आदमी अब खतरे से बाहर है तो वह घर के लिए चल दिया।

उसके पास इतने पैसे भी नहीं बचे थे कि वह बस से घर पहुँचता। राजू को दु:ख था कि इतनी मेहनत के बाद भी वह और उसकी बहन दीवाली नहीं मना पाएंगे लेकिन किसी की जान बच गई इस बात का संतोष भी उसे बहुत था।

राजू कमरे में पत्रिका पढ़ रहा था। दीवाली की खरीदारी के लिए मोहल्ले के लड़के बाजार गये थे। राजू का दोस्त सुरेश पटाखे खरीदने चलने के लिए उसे बुलाने आया तो उसने मना कर दिया। उसने सोच लिया था कि वह घर से बाहर ही नहीं निकलेगा।

''भैया-भैया, चलो पापा बुला रहे हैं।''– गीता उसके पास आकर बोली।

बैठक में जाकर राजू ने देखा, पापा किसी से बातें कर रहे थे। उस आदमी के सिर पर पट्टी बंधी हुई थी। उसे देखते ही उसके पापा बोले– ''देखो राजू, तुमसे मिलने कौन आया है?''

वह व्यक्ति घूमा तो राजू ने उसे पहचान लिया वह वही आदमी था जिसे उसने अस्पताल पहुँचाया था।

बेटे, तुमने तो सच्ची दीवाली मनाकर मेरे जीवन में उजाला कर दिया, अब मैं तुम्हें दीवाली की शुभकामनाएं देने आया हूँ।– कहते हुए उन्होंने मिठाई और ढेर से पटाखे उसकी ओर बढ़ा दिये।

–रहमान भाई ने जब मुझे बताया था कि तुम कंदीले बनाते हो तब मैंने सोचा था कि मेरा राजू समझदार हो गया है लेकिन आज तो मुझे गर्व हो रहा है कि राजू मेरा बेटा है।– पापा ने गर्व से कहा।

गीता बैठक में आ गई। राजू ने उसे फुलझड़ी के डिब्बे दे दिए और स्वयं अंकल के लिए चाय लेने अन्दर चला गया।

बाल गीत : श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

कभी नहीं स्वीकार

घोर तम के आवरण में,
ढक गया संसार।
सिर उठा कर हँस अंधेरा,
आ खड़ा है द्वार।
कभी नहीं स्वीकार।।

जानता लघु दीप हूँ मैं,
घन तिमिर विस्तार।
तो भ्रमित भयभीत होकर,
मान लूँ क्या हार?
कभी नहीं स्वीकार।।

है सघन सत्ता तिमिर की,
कालिमा पर्याप्त।
गाँव, घर, जंगल, शहर में,
है अंधेरा व्याप्त।
मार्ग विचलित हो सहम कर,
मैं करूँ मनुहार।
कभी नहीं स्वीकार।।

मैं लड़ूँगा घोर तम से,
शक्ति ले भरपूर।
देखना फिर इस तिमिर का,
गर्व होगा चूर।
मैं भला अज्ञानता का,
हँस करूँ सत्कार।
कभी नहीं स्वीकार।।

प्रस्तुति : राधा नाचीज

पहेलियां

1. दुनियाभर की करता सैर,
धरती पर न रखता पैर।
दिन में सोता रात में जागता,
रात अंधेरी मेरे बगैर।।

2. न कभी आता है,
न कभी यह जाता है।
इसके भरोसे जो रहे,
हमेशा पछताता है।।

3. तीन रंगों का सुन्दर पक्षी,
नील गगन में भरे उड़ान।
ये है सबकी आँखों का तारा,
हम सब करते इसका सम्मान।।

4. हाथ-पैर में जंजीर पड़ी,
फिर भी दौड़ लगाता।
टेढ़े-मेढ़े रास्तों से,
गाँव-गाँव में घुमाता।।

5. बेवकूफों की पदवी दी जाती,
रात्रि को मैं देखा करता।
बहुत ही कम मैं उड़ता हूँ,
एक स्थान पर हूँ बैठा करता।।

6. एक विचित्र ऐसी चीज,
उजली जमीन काला बीज।
जो इससे करते प्यार,
वे बन जाते हैं होशियार।।

7. चार खंभों पर वह चलता,
बड़े पत्ते जैसे उसके कान।
हरे-भरे पत्ते खाकर पलता
दूर से ले सब उसे पहचान।।

कहानी : गोविन्द भारद्वाज

नीलम परी और मोनू

एक था मोनू। वह स्कूल जाते समय बड़े नखरे करता था। उसके मम्मी-पापा उसकी इस आदत से बड़े परेशान रहते थे। वे मोनू की इस आदत से छुटकारा पाना चाहते थे।

एक रात मोनू अपने कमरे में सो रहा था। ''मोनू ... ओ मोनू ... क्या तुम सो रहे हो?''

यह सुनकर मोनू अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गया। उसने खिड़की की ओर देखा। खिड़की के बाहर एक परी खड़ी थी। उसी ने मोनू को आवाज देकर उठाया था।

''आप कौन हैं?'' मोनू ने खिड़की के पास जाकर पूछा।

''मैं नीलम परी हूँ और परियों के देश से तुमसे मिलने आई हूँ।'' नीलम परी ने पलकें झपकाते हुए कहा।

मोनू बोला– ''आओ अन्दर आओ, बाहर क्यों खड़ी हो?''

''नहीं, नहीं। मैं बाहर ही ठीक हूँ।'' परी बोली।

''एक बात बताओ मोनू तुम स्कूल जाते समय नखरे क्यों करते हो? पता है तुम्हारी इस हरकत से तुम्हारे मम्मी-पापा कितने दुखी होते हैं।''

''आपको कैसे मालूम हुआ परी जी?'' मोनू ने पूछा।

''मैं परी हूँ। मैं दुनिया के सब बच्चों के माता-पिता का दुख जानती हूँ।'' नीलम परी ने उत्तर दिया।

''ठीक है परी जी, मैं अब कभी अपने मम्मी-पापा को दुखी नहीं करूंगा परन्तु मेरी एक शर्त है।'' मोनू ने कहा।

''कैसी शर्त?''

''आप रोजाना मुझसे मिलने आया करना और ढेरों खिलौने व मिठाईयां भी साथ में लाना।'' मोनू ने शर्त बताई।

नीलम परी मुस्कुराई और बोली– ''बस इतनी-सी बात। मैं रोजाना खिलौने व मिठाईयां तो भेज दिया करूंगी परन्तु आऊँगी महीने में एक बार क्योंकि मुझे तुम जैसे और बच्चों से भी मिलने जाना पड़ता है न।'' मोनू ने नीलम परी की बात मान ली। थोड़ी देर में टाटा ... बाय-बाय ... करते हुए वह चली गई। मोनू ने झट से दरवाजा खोलकर इधर-उधर देखा परन्तु वहाँ सुनसान अंधेरे के अलावा कुछ नहीं था। वह चुपचाप जाकर सो गया।

सुबह होते ही अलार्म बजा। मोनू तुरन्त उठा और सुबह के कार्य पूर्ण कर स्कूल जाने की तैयारी करने लगा। उसके मम्मी-पापा भी उठकर अपना-अपना काम करने लगे। अपने बेटे की आदत में सुधार देखकर वे भी मन ही मन खुश थे।

प्रत्येक सुबह उसे कमरे के बाहर कुछ न कुछ सामान मिलने लगा। उसे विश्वास हो गया कि सचमुच नीलम परी उसके लिए खिलौने व मिठाईयां भिजवा रही है।

एक महीने बाद पुनः नीलम परी मोनू से मिलने आई। इस प्रकार यह सिलसिला जारी रहा। इस दौरान मोनू अच्छा बच्चा बन चुका था। उसने अपने विद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर अपने मम्मी-पापा का नाम रोशन किया।

एक दिन स्कूल के लिए तैयार होते समय मोनू ने नीलम परी की बात अपनी मम्मी को बताई उसकी बात सुन वह बहुत हँसी और बोली– ''मेरा राजा बेटा, मैं ही नीलम परी का रूप लेकर तुम्हारे सामने आती रही। मेरे पास तुम्हें सुधारने का कोई दूसरा चारा नहीं था।''

''वो खिलौने और मिठाईयां।'' वह बोला।

''हाँ-हाँ वो भी मैं ही तुम्हारे लिए रखती थी।'' मम्मी ने उसके बालों में हाथ फेरते हुए कहा।

खुश होकर मोनू ने अपना बैग उठाया और स्कूल की तरफ चल पड़ा।

बाल कविता : कमलसिंह चौहान

मीठी बोली

खिल-खिलाते प्यारे बच्चे,
भावनाओं में होते कच्चे।
प्रेम करो तो झुक जाते हैं,
होते दिल के पूरे सच्चे।।

क्षण में रूठे मन जाते हैं,
प्यार से अपने बन जाते हैं।
फूलों से ये कोमल होते,
मीठे बोल होते अच्छे।।

गली मोहल्ले चहका करते,
बातों से हैं फूल खिलाते।
हँसते खिलते गाते रहते,
शाला के ये प्यारे बच्चे।।

इनको सीख सिखाओ अच्छी,
भारत माँ का रूप हैं बच्चे।
जैसा ढालों ढल जायेंगे,
गीली मिट्टी के बरतन हैं कच्चे।।

बाल कविता : डॉ. रामनिवास 'मानव'

फूलों-सा मुस्काओ

बहो कि जैसे बहती धारा,
मगर न टूटे कभी किनारा।

बढ़ते जाओ, कहता पानी,
दुनिया सारी आनी-जानी।

हरदम पक्षी बनकर चहको,
फूलों-सा मुस्काओ, महको।

हो साकार सभी का सपना,
इन्द्रधनुष हो जीवन अपना।

तितली बनकर बचपन नाचे,
और तोतली कविता बांचे।

वैर-भाव सब पीछे छूटें,
सदा प्रेम के अंकुर फूटें।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन

–प्रवीण कुमार

क्यों चिंटू, तुम क्यों नहीं चलोगे? अरे हाँ, तुम्हारे पास तो इतने पैसे नहीं होंगे ना, मेले में मजे करने के लिए के लिए।
हाँ! हाँ! हाँ! तुम मेरा मज़ाक उड़ा रही हो, किट्टी।
किट्टी, तुम्हें इस तरह किसी का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।

देखो, देखो मेरा नया पर्स। इसमें बहुत सारे पैसे भी हैं। हम मेले में खूब मज़े करेंगे।
किट्टी, तुम अपना पर्स संभाल कर रखना, मेले में बहुत भीड़ है।
मुझे अपना पर्स संभालना आता है। चलो, मैं तुम सबको पहले आइसक्रीम खिलाऊँगी।

भईया, इन सबको एक-एक आइसक्रीम दीजिए। अरे! मेरे पैसे कहाँ गए? किसी ने मेरा पर्स काटकर सारे पैसे निकाल लिए? अब क्या होगा।
हाँ! हाँ! मोंटू, तुमने ठीक ही कहा था, मुझे अपना पर्स संभाल कर चलना चाहिए था।
अब मुझे समझ में आ गया कि हमें किसी की गरीबी का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए। मैं कभी दोबारा ऐसा नहीं करूँगी।

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

कभी न भूलो

❖ जय उन्हीं की होती है जो अपने आपको संकट में डालकर कार्य सम्पन्न करते हैं। कायरों की जय कभी नहीं होती।

– जवाहरलाल नेहरु

❖ कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं। जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं।

–लोकमान्य तिलक

❖ जो सचमुच प्रेम करता है। उस मनुष्य का हृदय धरती पर साक्षात स्वर्ग है। ईश्वर उस मनुष्य में बसता है क्योंकि ईश्वर प्रेम है।

– लेमेन्नाइस

❖ उस जीवन को नष्ट करने का कोई अधिकार नहीं जिसको बनाने की शक्ति हम में न हो

– महात्मा गाँधी

❖ अन्याय को मिटाओ लेकिन अपने आपको मिटाकर नहीं। – प्रेमचंद

❖ अपने जीवन का ध्येय बनाओ और इसके बाद अपनी सारी शारीरिक और मानसिक शक्ति जो भगवान ने तुम्हें दी हैं, उसमें लगा दो। – कार्लाइल

❖ किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय नष्ट न करो, उसके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करो। – कार्ल मार्क्स

❖ हमारा कर्तव्य है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखें अन्यथा हम अपने मन को सक्षम और शुद्ध नहीं रख पाएंगे।

– गौतम बुद्ध

❖ अवसर आने पर उसका भरपूर लाभ उठाओ। अवसर बार-बार हाथ नहीं लगता। ऐसा मत सोचो कि अवसर तुम्हारा द्वार दोबारा खटखटाएगा। – सोफोक्लीज

❖ ज्ञानीजन विवेक से सीखते हैं। साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी पुरुष आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। – कौटिल्य

❖ जीतता वह है जिसमें शौर्य, धैर्य, साहस, सत्व और धर्म होता है।

– हजारीप्रसाद द्विवेदी

❖ जो काम घड़ों जल से नहीं होता उसे दवा के दो घूँट कर देते हैं और जो काम तलवार से नहीं होता वह सूई कर देती है।

– सुदर्शन

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

मांद बनाकर रहने वाली मीठे पानी की

झींगा मछली

झींगा मछली वास्तव में मछली नहीं है। यह ताजे पानी की नदियों और झीलों में पायी जाने वाली 'क्रस्टेशियन' है। यह कठोर पानी में विशेष रूप से जिसमें चूने की मात्रा हो रहना अधिक पसन्द करती है। झींगा मछली को अंग्रेजी में 'क्रे फिश' कहते हैं। इस शब्द का उपयोग कांटेदार लॉब्स्टर जैसे कुछ समुद्री जीवों के लिए भी किया जाता है किन्तु यह एक भ्रामक तथ्य है। वास्तव में 'क्रे फिश' अर्थात झींगा मछली ताजे पानी में पायी जाने वाली एक विशिष्ट जलचर है।

झींगा मछली समशीतोष्ण भागों में पायी जाती है। यह इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, दक्षिणी अमरीका, न्यूगिनी, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि में काफी संख्या में देखने को मिलती है। झींगा मछली अफ्रीका में नहीं पायी जाती किन्तु मेडागास्कर में है। इसी तरह यह एशिया के बहुत बड़े भाग में नहीं पायी जाती किन्तु कोरिया और जापान के उत्तरी द्वीपों में बहुतायत से मिलती है। झींगा मछली की कुछ जातियां ऐसी हैं जिन्हें सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है और उन्हें पाला जा सकता है। उदाहरण के लिए फ्रांस की झींगा मछली 'रेडक्ला' को इंग्लैंड की थेम्स नदी में सफलतापूर्वक पाला जा रहा है। इसी तरह संयुक्त राष्ट्र अमरीका की झींगा मछली जर्मनी में फल-फूल रही है।

झींगा मछली की लगभग पाँच सौ जातियां तथा उपजातियां हैं। विभिन्न जातियों और उपजातियों की झींगा मछलियों के आकार, शारीरिक संरचना और आदतों आदि में थोड़ा बहुत अन्तर होता है। तस्मानिया की 'लैंड-क्रेब' नामक झींगा मछली पानी से बाहर निकलकर जंगलों में पहुँच जाती है और नम जमीन में मांद बनाकर रहने लगती है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के केंटुकी नामक स्थान पर कुछ प्रकाशहीन जलगुफाएं हैं जिन्हें 'मैमथ'

कहते हैं। इन गुफाओं में रहने वाली झींगा मछली रंगहीन और अंधी होती है। इसकी आंखें नहीं होती किन्तु आँखों के निशान पाये जाते हैं। जीव वैज्ञानिकों का मत है कि कभी इसकी आंखें थीं किन्तु एक लम्बे समय तक अन्धेरे में रहने के कारण इसकी आंखें समाप्त हो गयी हैं।

झींगा मछली अधिक तापक्रम सहन नहीं कर पाती। यही कारण है कि यह ग्रेनाइट या इसी तरह के चट्टानी क्षेत्रों में नहीं मिलती। झींगा मछली पानी में हो या पानी के बाहर, दोपहर में छाँव में चली जाती है। यह सर्दियों में नदियों के किनारे मिट्टी में मांदें बनाती हैं। ठंड से पानी के जमने की जितनी आशंका होती है। इसकी मांदें उतनी ही अधिक गहरी होती हैं। कुछ जातियों की झींगा मछली नदियों के किनारों को काफी नुकसान पहुँचाती हैं। ये बहुत गहरी मांद खोदती हैं। कुछ जातियों की झींगा मछलियां वर्षभर मांदें में लगी रहती हैं और अर्ध भूवासी सी हो गयी हैं। यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। उत्तरी अमेरिका की एक विशिष्ट जाति की झींगा मछलियों का विशिष्ट विश्व कीर्तिमान है। इन्होंने शीतकाल में तारपिड सांपों को खाकर उनकी मांदों पर अधिकार कर लिया था। तारपिड सांप इस समय शीतकालीन गहन निद्रा लेते हैं। अत: इनमें प्रतिरोध करने की क्षमता नहीं रह जाती।

झींगा मछली की शारीरिक संरचना बड़ी विचित्र होती है। सामान्यतया इसकी लम्बाई 10 सेंटीमीटर या इससे कुछ अधिक होती है किन्तु कुछ जाति की झींगा मछलियां बहुत बड़ी तथा भारी होती हैं। विश्व की सबसे बड़ी झींगा मछली तस्मानिया में पायी जाती है। एस्टेकाप्सिस फ्रेंकलिनी नामक इस झींगा मछली का वजन 4 से 5 किलोग्राम तक होता है। झींगा मछली का रंग रेतीला पीला, हरा या गहरा कत्थई होता है। इसके शरीर के चार प्रमुख भाग होते हैं– सर, वक्ष, पेट और पूँछ। झींगा मछली का सर और वक्ष एक आवरण से ढका रहता है। इस आवरण का अगला सिरा नुकीला होता है। झींगा मछली के दो यौगिक आंखें होती हैं एवं सर के अग्र भाग मे संवेदनशील अंगों से युक्त चार एन्टीना होती है। इनके साथ ही एक जोड़ा लम्बी एन्टीना का होता है जो स्पर्शेन्द्रिय का कार्य करता है। झींगा मछली का एक जोड़ा मजबूत और दो जोड़े कमजोर जबड़े होते हैं। इन जबड़ों को 'मैक्सिली' कहते हैं। झींगा मछली के नौ जोड़े पैर होते हैं। इनमें चार जोड़े पैर वक्ष पर होते हैं। इन्हीं से यह चलती-फिरती है। वक्ष के पैरों के आधार पर 20 जोड़े पंख जैसे गलफड़े होते हैं। इसकी मैक्सिली का दूसरा जोड़ा इन गलफड़ों तक पानी पहुँचाता है जिससे यह सांस लेती है। इसके वक्ष पर ही तीन जोड़े 'अपेन्डेज' नामक अंग होते हैं जो जबड़ों तक भोजन पहुँचाने का कार्य करते हैं। झींगा मछली के वक्ष के नीचे पेट होता है जो अनेक भागों में विभाजित होता है। इस पेट वाले भाग में पांच जोड़े पैर होते हैं। इनमें नर झींगा मछली के पैर का एक जोड़ा दरारों वाला होता है तथा यह प्रजनन अंग के रूप में कार्य करता है। पेट के शेष चार जोड़े पैर तैरने के काम आते हैं। शरीर के अन्त में एक बड़ी पंखे जैसी पूँछ होती है। इसकी पूँछ अत्यन्त विलक्षण होती है। यह इसकी सहायता से शत्रु से बचने के लिए तेजी से पीछे की ओर तैर सकती है।

झींगा मछली दिन के समय पत्थरों के नीचे अथवा मिट्टी की मांदों में आराम करती है और रात्रि के समय भोजन की खोज में निकलती है किन्तु कभी-कभी इसे दिन के समय भी शिकार करते हुए देखा गया है। इसका प्रमुख भोजन पानी के छोटे-छोटे जीव हैं। यह स्टिकलबैक जैसी छोटी मछलियां ताजे पानी के घोंघे, कृमि, टेडपोल तथा विभिन्न प्रकार के कीड़े-मकोड़े और इनके लारवे आदि बड़े स्वाद से खाती है।

कुछ जातियों की झींगा मछलियां जलीय पौधे खाती हैं। उत्तरी अमेरिका की मिसीसिपी घाटी में पायी जाने वाली झींगा मछली का प्रिय भोजन चावल है। अत: किसान इसे अपना शत्रु समझते हैं और कीटनाशक दवाओं की सहायता से इसे मार डालते हैं।

झींगा मछली का शिकार करने का ढंग बड़ा रोचक होता है। इसके वक्ष के पैरों का अगला जोड़ा बड़ा होता है तथा इसके दोनों पैरों के अग्रभाग का आकार चिमटे की तरह होता है। इसके शेष तीनों जोड़ों के पैरों में अग्रभाग भी चिमटे के आकार के होते हैं किन्तु ये पहले जोड़े के पैरों की तुलना में बहुत छोटे होते हैं। झींगा मछली अपने शिकार को इन्हीं पैरों के चिमटे वाले भाग से पकड़ती है और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देती है। इसके बाद ये टुकड़े मुँह तक पहुँचा दिये जाते हैं। झींगा मछली के सर पर स्थित प्रत्येक एन्टीना के आधार पर एक मलद्वार होता है। जिनसे पानी के साथ मल भी बाहर निकाल दिया जाता है।

झींगा मछली के नवजात बच्चे सामान्य कीटों और क्रस्टेशियन की तरह केंचुल बदलते हैं और

वृद्धि करते हैं। झींगा मछली के बच्चे केवल चार बार केंचुल बदलते हैं। इनमें सर्वप्रथम कैल्शियम का पुराना आवरण खून में वापस ले लिया जाता है। इसका उपयोग पुराने आवरण के नीचे तैयार होने वाले नये आवरण में किया जाता है। झींगा मछली का शरीर पुराने आवरण के झड़ने के बाद पानी सोखकर फूल जाता है। इसके बाद नया आवरण निकलता है जो आरम्भ में कोमल होता है किन्तु कुछ समय बाद धीरे-धीरे कठोर हो जाता है। झींगा मछली को एक बार केंचुल बदलने में 6 घंटे लगते हैं। इस मध्य यह कुछ भी खाती-पीती नहीं है और किसी मांद या इसी तरह के सुरक्षित स्थान में छिपी रहती है। यह इसके लिए बड़ा खतरनाक समय होता है। इस काल में यह इतनी कमजोर हो जाती है कि शत्रुओं से अपनी रक्षा नहीं कर सकती। कभी-कभी तो आवरण बदलते समय कमजोरी के कारण इसकी स्वत: मृत्यु हो जाती है। सामान्यतया झींगा मछली के बच्चे 2 से 3 वर्षों के मध्य वयस्क हो जाते हैं तथा लगभग 20 वर्षों तक जीवित रहते हैं।

दीपावली पर विशेष कहानी : दर्शन सिंह 'आशट'

संदेश

दीपावली नजदीक आ रही थी। मनदीप का चाव बढ़ता जा रहा था। वह सोच रहा था कि वह इस बार इतनी आतिशबाजी जलायेगा कि उसके दोस्त मुँह में अंगुलियां दबाते रह जायेंगे। वह दोस्तों को बम-पटाखों की किस्में गिनाने लगता, अनार, हवाइयां, मुर्गा बम, आलू बम, फुलझड़ियां, डिब्बा बम, रेलगाड़ी वगैरह-वगैरह।

मनदीप ने पिछले वर्ष भी खूब आतिशबाजी जलाई थी। माता-पिता का इकलौता बेटा होने के कारण वह अपनी हर इच्छा जबरदस्ती मनवा लेता था।

मनदीप का गहरा दोस्त था रमनीक। रमनीक का घर मनदीप के घर से दूर था। मित्र होने के कारण वे दोनों कक्षा में इकट्ठे ही बैठते थे। कई दिनों से रमनीक स्कूल नहीं आ रहा था। मनदीप को पता था कि रमनीक के पापा बीमार रहते हैं लेकिन उसे यह नहीं पता था कि उन्हें कौन सी बीमारी है? दरअसल उसके पापा को सांस की बीमारी थी।

एक दिन मनदीप अपनी साइकिल पर रमनीक के घर गया। उसने देखा कि उसके पापा पम्प के साथ सांस की दवा ले रहे थे। वह बार-बार खांस भी रहे थे। उनकी ऐसी हालत देखकर मनदीप का मन उदास हो गया। उसने घर आकर अपने दादा जी को रमनीक के पापा की बीमारी के बारे में बताया। दादा जी का मनदीप के साथ गहरा प्यार था। मनदीप कई बार रात को कहानी सुनता-सुनता उनके साथ ही सो जाता था। रात को मनदीप ने रमनीक के पापा वाली बात फिर दादा जी को बताई। सुनकर दादा जी ने उसे बताया कि यह सब प्रदूषण के कारण है। दादा जी कुछ सोचते रहे। फिर वह उससे पूछने लगे, 'आज कहानी नहीं सुनोगे?'

मनदीप एकदम बोला, 'सुनाइये दादा जी ...।

दादा जी मनदीप को एक ऐसी कहानी सुनाने लगे जिसमें एक जंगल में भयानक आग लग जाती है। एक चिड़िया बार-बार नदी पर जाती है और अपनी चोंच में पानी की बूंद भरकर लाती है और जलती आग पर फेंक देती है। वह फिर नदी पर जाती है और वही प्रक्रिया वह बार-बार दोहराती है।

मनदीप की जिज्ञासा बढ़ती जाती है। वह एकदम दादा जी को पूछता है, 'लेकिन दादा जी, क्या एक छोटी-सी चिड़िया जंगल की आग को बुझा सकती है?'

दादा जी बोले, 'बेटा, तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर आगे आ रहा है। एक ऋषि चिड़िया को बार-बार ऐसा करते देखते हैं। वह चिड़िया को पूछते हैं, 'अरे नन्ही सी चिड़िया, क्या तुम्हारे थोड़े पानी की बूंदें जंगल की इस आग को बुझा सकती है?'

इस पर चिड़िया ने जवाब दिया– 'हे ऋषिवर, मुझे भी पता है कि मेरी बूंद-बूंद पानी से जंगल की आग नहीं बुझ सकती लेकिन मैं चाहती हूँ कि जब इस जंगल का इतिहास लिखा जायेगा तो मेरा नाम जंगल को आग लगाने वालों में नहीं, आग बुझाने वालों में लिखा जाये।'

ऋषि चिड़िया की बात से बहुत प्रभावित हुआ। वह ऋषि तुरंत नदी पर जाता है और अपना पात्र पानी से भरकर लाता है और जंगल की आग पर फेंक देता है। वह बार-बार ऐसा करता है। इतने में कुछ और राहगीर वहाँ से गुजरते हैं। वे चिड़िया और ऋषि को ऐसा करते देखते हैं तो वे भी नदी से अपने-अपने साधनों द्वारा पानी लाकर जंगल की आग पर फेंकने लगते हैं। आखिर बड़ी संख्या में जुटे लोग अपनी एकता के कारण जंगल की आग को बुझाने में कामयाब हो जाते हैं।

कहानी सुनता-सुनता मनदीप सोया नहीं बल्कि किसी गहरी सोच में डूब गया।

दादा जी ने पूछा, 'बेटा, क्या सोच रहे हो, कहानी अच्छी नहीं लगी क्या?'

मनदीप बोला, 'दादा जी, क्या मैं भी उस चिड़िया की भान्ति कोई काम कर सकता हूँ?'

दादा जी सब समझते थे। लेकिन वह थोड़ा अंजान सा बनते हुए उससे पूछने लगे, 'क्या तुम भी चिड़िया बनकर किसी जंगल की आग बुझाना चाहते हो?'

मनदीप तपाक से बोला, 'हाँ दादा जी, मैं भी आग बुझाने का प्रयत्न करूंगा लेकिन जंगल की आग नहीं प्रदूषण की। मैंने पापा से पटाखे खरीदने के लिए इस बार पाँच हजार रुपये लिए हैं। लेकिन मेरी आँखों के सामने बार-बार मेरे मित्र रमनीक के पापा जी आ रहे हैं। अब मैं एक भी पटाखा नहीं खरीदूंगा बल्कि अपने दोस्तों को भी चिड़िया वाली कहानी सुनाकर कहूंगा कि प्रदूषण कम करके हम न जाने सांस की बीमारियों से जूझ रहे कितने लोगों की जिंदगी बचाने में सफल हो सकते हैं।'

'वाह मेरे नौनिहाल, तुमने कहानी में छिपे असल संदेश को बाखूबी समझ लिया है। यदि तुम्हारे जैसे बच्चे प्रदूषण समाप्त करने का दृढ़ निश्चय कर लें तो मानव की जिंदगी और ज्यादा लम्बी और खुशहाल हो सकती है। प्रदूषण समाप्त होगा तो प्रकृति की मुस्कान भी फैलेगी।'

मनदीप दादा जी से हाथ मिलाता हुआ बोला, 'दादा जी, आप से मेरा यही वादा है।'

दादा जी मनदीप को गले लगाते हुये बोले, 'शाबाश मनदीप, मेरा तुझे कहानी सुनाना सफल हो गया है।'

थोड़ी देर में मनदीप दादा जी के साथ सो गया।

पढ़ो और हँसो

चिंटू पेड़ पर उल्टे लटका हुआ था।
पिंटू ने पूछा– क्या हो गया?
चिंटू : कुछ नहीं, सिरदर्द की गोली खाई है, कहीं पेट में न चली जाए।

एक किसान का ट्रैक्टर रास्ते में अचानक कीचड़ में फँस गया। तभी एक अंग्रेज आया उसने पूछा– 'व्हाट आर यू डूइंग?'
किसान बोला– माई ट्रैक्टर इज कीचड़ में फंसिंग, न हिलिंग, न डूलिंग सिर्फ यों-यों करिंग।

पहली औरत : क्या बताऊँ, मेरा मुन्ना तो हरदम अंगूठा ही चूसता रहता है, कोई उपाय बताओ?
दूसरी औरत : तुम ऐसा करो, अपने मुन्ने को एक ढ़ीली निक्कर पहना दो, दिनभर वह अपनी निक्कर को ही सम्भालता रहेगा और अंगूठा चूसने की आदत छूट जायेगी।

चना बेचने वाला : ले लो चना। एक बार खाओगे तो हजार बार खाओगे।
एक लड़का : मुफ्त में खिलाओगे तो बार-बार खायेंगे।

पति जब ऑफिस से लौटे तो चाय-नाश्ता देकर पत्नी ने कहा– सुनो जी, आपकी नीली शर्ट प्रेस करते वक्त जल गई।
–कोई बात नहीं, मेरे पास उसी रंग की दूसरी शर्ट है।– पति बोला।
पत्नी : मुझे पता है तभी तो मैंने उस शर्ट में से थोड़ा कपड़ा काटकर जली कमीज में पैबन्द लगा दिया।

मोनू : एक बार मेरे ऊपर से स्कूटर निकल गया पर फिर भी मुझे कुछ नहीं हुआ।
सोनू : यह तो कुछ भी नहीं एक बार मेरे ऊपर से हवाईजहाज निकल गया, मैं फिर भी बच गया।

एक व्यक्ति अपने दोस्त से बोला– 'कोई ऐसी चीज बताओ जो ब्रेकफास्ट में नहीं खायी जा सकती।'
दोस्त बोला : 'एक क्या!' मैं दो बताता हूँ।
व्यक्ति : ठीक है। दो बताओ।
दोस्त : 'लंच और डिनर'।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

अध्यापक : (श्रद्धा से) अंग्रेजी बोल सकती हो?
श्रद्धा : जी हाँ।
अध्यापक : बोल कर दिखाओ।
श्रद्धा : अंग्रेजी।

एक बार एक व्यक्ति मेला देखने गया। वहाँ रात को किसी ने उसका कम्बल चुरा लिया। व्यक्ति के घर लौटने पर उसके पड़ोसी ने पूछा– क्यों भाई कैसा रहा मेला?
व्यक्ति ने बड़बड़ाते हुए कहा– अजी मेला-वेला कुछ नहीं। वहाँ तो लोग मेरा कम्बल चुराने के लिए इकट्ठे हुए थे।

राजेश : (भिखारी से) भई लौटते वक्त जरूर तुम्हें कुछ न कुछ दूंगा। इस समय मैं जल्दी में हूँ।
भिखारी : नहीं नहीं, यह नहीं हो सकता। जो देना है अभी दे दो। इस तरह उधार में मेरे लाखों डूब गए।

दिनेश और प्रवीण गोवा के 'बीच' पर घूम रहे थे।
प्रवीण ने पूछा– इसे 'बीच' क्यों कहते है?
दिनेश बोला– यह आसमान और जमीन के बीच में है इसलिए।

योगिता : अगर किसी के साथ कोई समस्या हो जाए तो उसे किसके पास जाना चाहिए?
विनी : किसान के पास।
योगिता : वह क्यों?
विनी : क्योंकि उसके पास हल होता है।

– निष्ठा आनन्द (लुधियाना)

विज्ञान के अध्यापक ने मीनू से प्रश्न किया, अगर सोने को खुली हवा में छोड़ दिया जाए तो उस पर क्या प्रतिक्रिया होगी?
मीनू ने जवाब दिया– जी वह चोरी हो जाएगा।
अध्यापक : शीलू तुम बताओ पहाड़ पर चढ़ने वाले कमर से रस्सी क्यों बांधते हैं?
शीलू : ताकि बीच में कोई भाग न सके।

एक मच्छर परेशान बैठा था।
दूसरे मच्छर ने पूछा– क्या हुआ?
पहला बोला : यार, गजब हो रहा है, चूहेदानी में चूहा, साबुनदानी में साबुन मगर मच्छरदानी में आदमी सो रहा है।

रिंकी : मैं ये रोटी नहीं खाऊँगी।
पिंकी : क्यों?
रिंकी : इस रोटी पर से चूहा निकलकर गया है।
पिंकी : तो क्या हुआ? चूहे ने चप्पल थोड़े ही पहनी थी।

मास्टर जी : चिंटू, 'स्वर' और 'व्यंजन' में क्या फर्क है?
चिंटू : मास्टर जी, स्वर मुँह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मुँह के अन्दर जाते हैं।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

नन्हीं चिड़िया
जेब्रा फिंच

ऑस्ट्रेलिया में पाये जाने वाले पक्षियों की सबसे छोटी तथा सामान्य प्रजाति है जेब्रा फिंच। शुष्क स्थानों पर रहना पसन्द करने वाला यह पक्षी जंगलों के साथ घास के मैदानों में भी अपना बसेरा बनाता है।

इस पक्षी की चोंच चटक लाल रंग की होती है और सिर, पंख और पीठ स्लेटी तथा डैनों के नीचे का भाग धूसर पीले रंग का होता है। इसका वैज्ञानिक नाम 'टैनिओपियागिया गुट्टाटा' तथा पुकारने का नाम जेब्रा फिंच है। नारंगी रंग के गालों वाले नर जेब्रा फिंच मादा से अधिक आकर्षक दिखते हैं। नर तथा मादा दोनों ही पक्षियों की आँखों के नीचे काले सफेद घेरे होते हैं तथा सीने तथा पूँछ पर सफेद और काली पट्टियां होती हैं। इसके इस नामकरण के पीछे का कारण जेब्रा की भांति पायी जाने वाली यही पट्टियां और यही लुक है।

यह एक सामाजिक पक्षी है। जोड़ा बनाकर रहने वाले जेब्रा फिंच के झुण्ड में 100 से ज्यादा सदस्य शामिल हो सकते हैं। यह अपना घोसला पेड़ों के खोखले तनों तथा झाड़ियों में बनाता है। इसका घोसला घास के सूखे तिनकों से बना होता है जिसमें यह पंखों को बिछाकर इसे गद्दीदार और आरामदेह कर देता है। घोसले में प्रवेश के लिए जेब्रा फिंच इसमें एक नालीदार रास्ता भी तैयार करता है। मादा जेब्रा फिंच एक बार में 4 से 6 सफेद धूसर अण्डे देती है तथा माता-पिता दोनों मिलकर बारी-बारी से 14 दिनों तक अण्डों को सेते हैं। जन्म के समय चूजों का रंग स्लेटी तथा चोंच काली होती है। ये 5 से 6 सप्ताह में घोसला छोड़कर आकाश में उड़ने लायक हो जाते हैं।

जेब्रा फिंच की लम्बाई अधिकतम 10 सेंटीमीटर तक होती है। यह शुष्क वातावरण में रहने का अभ्यस्त होता है तथा बिना पानी के कई रोज तक जीवित रह सकता है। यह पानी में चोंच डुबोकर पीने की बजाय सीधे सुड़क तथा गटक जाता है तथा यही विशेषता इसे शेष पक्षियों से अलग कर देती है। जेब्रा फिंच मूलत: बीजों को खाना पसन्द करता है। लेकिन जब आहार का संकट हो तो यह दीमकों का भी आहार करने में गुरेज नहीं करता है।

बाल कविता : सुमेश निषाद

बाल दिवस
का न्यारा दिन

चौदह नवम्बर प्यारा दिन।
बाल दिवस का न्यारा दिन।

नेहरु जी का जन्म दिवस।
ये पर्व बढ़ाता जीवन रस।

प्रतियोगिताएं होती अनेक।
बढ़ाती सबसे कौशल विवेक।

मिल-जलुकर सब हँसते गाते।
सारे बच्चे खुशी मनाते।

प्यार खुशी का उत्सव यह।
सारे देश का गौरव यह।

बाल कविता : शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

जगमग जगमग
दीप जले

दीप नेह का, दीप गेह का,
दीप गाँव का, दीप देश का।
दीप महलों का, दीप कुटियों का,
दीप किसान का दीप उद्योग का।।

दीप कर्म का दीप ज्ञान का,
दीप आन का, दीप शान का।
दीप विद्या का दीप ज्ञानार्जन का,
सत्य नेह और दया भाव का।।

चहूं ओर दीप जले,
भारत देश खुशहाल लगे।
आपस में स्नेह प्रेम का,
जगमग जगमग दीप जले।।

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। मुझे जून-जुलाई अंक मिला। कहानियों में 'चाँद छूने की जिद' और 'वचन निभाया' कहानियां अच्छी लगीं।

'मन के अच्छे होते हैं बच्चे' और 'पानी बचाओ' कविताएं पसन्द आईं। गुणों से भरपूर 'मूंग और मूंग की दाल' लेख में अच्छी जानकारी दी गई है। हर उम्र के व्यक्ति को मूंग की दाल का उपयोग करना चाहिए। हँसती दुनिया की जितनी तारीफ करो उतनी ही कम है।

– स्नेहा वालिया (ठाकुरपुरा, अम्बाला)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं और मेरे घर वाले इसका बेसब्री से इंतजार करते हैं। हम इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ते हैं। अगस्त माह में कहानी 'हरियल की सीख' और 'सीप का मोती' अच्छी लगी। कवताएं और लेख भी अच्छे थे।

हम इसके बारे में बस इतना कहेंगे कि यह पत्रिका बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए जरूरी है।

– वैभव पुण्ढीर (डांगोली बांगर)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। सितम्बर की पत्रिका प्राप्त हुई। 'शिक्षक की भूमिका' (रूपनारायण काबरा) और दो प्रेरक-प्रसंग (नेहा नागपाल) पढ़कर मन पुलकित हो उठा।

बच्चों के लिए यह पत्रिका शिक्षाप्रद व अनमोल है।

– पूर्णसिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

हम हँसती दुनिया के नियमित सदस्य हैं और हम सबको पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। मैं और मेरा छोटा भाई इसे बड़े आनन्द के साथ पढ़ते रहते हैं। पत्रिका से हमें जानकारीपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक लेख तथा ज्ञान भरी प्यारी-प्यारी जानकारियां व ढेर सारे प्रेरक-प्रसंग एवं शिक्षाप्रद कहानियां पढ़ने को मिलती हैं।

इसके अलावा बाल कविताएं भी शिक्षाप्रद होती हैं।

– विनोद व जय बिल्दानी (बड़नेरा)

हमें हँसती दुनिया बहुत पसन्द है। इसका हमें हर महीने ही बेसब्री से इन्तजार रहता है। यह हमारे ज्ञान में वृद्धि के अलावा हमारा मनोरंजन भी करती है। हम इसे स्वयं पढ़कर फिर कहानियां, कविताएं एवं चुटकुले अपने दोस्तों को भी सुनाते हैं।

हमने हँसती दुनिया के लिए अपने दिल की भावना एक कविता के रूप में भी प्रस्तुत है–

बच्चों के दिल को लुभाती है हँसती दुनिया।
सबका मनोरंजन भी करती है हँसती दुनिया।
सबको हँसाती भी है हँसती दुनिया।
ज्ञान भी बढाती है हँसती दुनिया।
हर तरह से अच्छी है हँसती दुनिया।
तभी तो हमें पसन्द है हँसती दुनिया।
पढ़ते ही दिल में बस जाती है हँसती दुनिया।
किताब ही नहीं एक अनमोल खजाना है हँसती दुनिया।
बनी रहे ये सदा हमारे बीच बनके हँसती दुनिया।

– ज्योति, नीलम व देवेन्द्र शर्मा (हनुमानगढ़)

पहेलियों के उत्तर

1. चाँद 2. कल 3. तिरंगा झंडा 4. साईकिल
5. उल्लू 6. पुस्तक 7. हाथी ।

अगस्त अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **गुरपाल** — **13 वर्ष**
   म. नं. 1509, नई रेलवे कॉलोनी,
   बराड़ा, जिला : अम्बाला (हरियाणा)

2. **कृति मौर्या** — **10 वर्ष**
   कुबेर गंज, हनुमान मंदिर के पीछे,
   शंकर बाजार,
   कर्वी चित्रकूट (उ.प्र.)

3. **स्वर्णजीत राणा** — **13 वर्ष**
   सन्त निरंकारी सत्संग भवन,
   आदर्श नगर, फगवाड़ा (पंजाब)

4. **खुशबू जेसवानी** — **11 वर्ष**
   तेलीबांधा गली नं. 4,
   निरंकारी भवन के पास,
   रविग्राम, रायपुर (छत्तीसगढ़)

5. **आकृत जयसिंघानी** — **12 वर्ष**
   म. नं. 7, अवंति विहार,
   रायपुर (छत्तीसगढ़)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं-

ओम सोमजनी (सोमनाथ नगर, गोधरा), **आर्या हेमजानी** (ग्रीनपॉर्क सोसाइटी, गोधरा), **कीर्ति** (शाहबाद मारकंडा), **नम्रता सचदेवा** (फरीदाबाद), **श्रेया** (लवकुश नगर प्रथम, जयपुर), **अक्षरा सिंह** (प्रयागराज), **विधिता** (द्वारका, दिल्ली), **आरव** (बनूड़), **सबीर कुमार** (पंजाला), **मानवी** (लहरागागा), **सुदर्शन** (साकीनाका, मुंबई), **अवीर** (पंजाबी बाग, दिल्ली), **प्रवेश, ज्ञानवीर** (अवंति विहार, रायपुर), **निशिका, ऋषि, जय, कबीर, विधि, आंचल, मंथन, लहर, मुस्कान लालवानी, मोहित, चिराग, यशिका पंजवानी, यशिका देववानी, देवांग, लव, शिव, हार्दिक, सुमित, मुस्कान रूपानी** (गोधरा)।

नवम्बर अंक रंग भरो

पेज नं. 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 15 दिसम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) फरवरी 2022 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
Bhakti
Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
Voice DIVINE
Voice Divine
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं 'निरंकारी वेबसाइट' पर

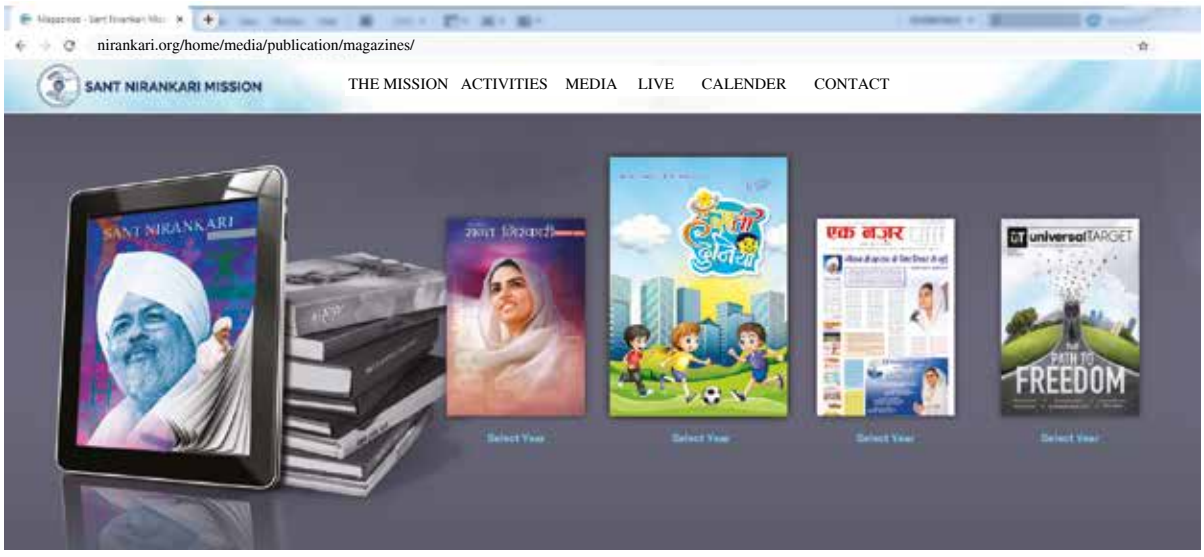

निरंकारी वेबसाइट पर सभी भाषाओं की 'हँसती दुनिया' , 'सन्त निरंकारी' एवं 'एक नज़र' को पढ़ने के लिए इन निर्देशों का पालन करें–

www.nirankari.org को **open** करेंगे तो **Main** पेज पर आपको **THE MISSION, ACTIVITIES, MEDIA and GALLERY** दिखाई देंगे। आपको **MEDIA** के **PUBLICATIONS option** को क्लिक करना है। यहाँ आपको सम्पूर्ण अवतार बाणी, सम्पूर्ण हरदेव बाणी, **E-BOOKS, Articles** और **Magazines** दिखाई देंगे। **Magazines** को क्लिक करते ही सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र तथा **Universal Target** के पेज खुल जाएंगे। यहाँ आप जो भी पत्रिका पढ़ना चाहते हैं, पढ़ सकते हैं।

– प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि **एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–**

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को मो. नं. 9266629841 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

– प्रबन्ध सम्पादक

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्प्लेक्स, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।